श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरिजी और उनका साधु समुदाय

[भंवरलाल नाहटा]

बीसवीं शताब्दी के चारित्रनिष्ठ प्रभावक महापुरुषों में श्री जिनकृपाचन्द्रसूरिजी का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने अपने जीवन में जैन शासन की उल्लेखनीय सेवायें कीं और गुजरात, राजस्थान, कच्छ और मध्यप्रदेश में उग्रविहार करके खरतरगच्छ की प्रतिष्ठा में समुचित अभिवृद्धि की थी। वे एक तेजस्वी, विद्वान और महान् प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी थे। उन्हें देखकर पूर्वाचार्यों की स्मृति साकार हो जाती थी। खरतरगच्छ की सुविहित परम्परा में अनेक महापुरुषों ने यतिपने के परिग्रह त्याग स्वरूप क्रियोद्धार करके आत्म-साधना क्रम को अक्षुण्ण रखा है उन्हीं में से आप एक थे।

आपका जन्म जोधपुर राज्य के चामु गांव में बाफणा मेघराजजी की धर्मपत्नी अमरादेवी की कुक्षि से सं० १९१३ में हुआ था। पूर्व पुण्य के प्राबल्य से आपको साधारण विद्याध्ययन के पश्चात् गुरुवर्य श्रीयुक्तिअमृत मुनि का संयोग प्राप्त हुआ जिससे पंचप्रतिक्रमणादि धार्मिक अभ्यास के पश्चात् व्याकरण, न्याय, कोष आदि विषयों का अच्छा ज्ञान हो गया। सदाचारी और त्याग वैराग्यवान् होने से सिद्धान्त पढ़ाने योग्य ज्ञात कर गुरुजी ने आपको सं० १९३६ में यति दीक्षा दी। गुरुमहाराज के साथ अनेक स्थानों की तीर्थयात्रा व धर्मप्रचार हेतु आपने अनेक स्थानों में चातुर्मास किये। रायपुर, नागपुर आदि मध्य प्रदेश में आपने पर्याप्त विचरण किया था। संयम मार्ग में आगे बढ़ने की भावना थी ही। सं० १९४१ में गुरु महाराज का स्वर्गवास हो जाने से वैराग्य परिणति में और भी अभिवृद्धि हुई। परिणाम स्वरूप आपने ज्ञानभंडार, दो उपाश्रय मन्दिर, नाल की धर्मशाला आदि लाखों की सम्पत्ति-परिग्रह का त्याग कर क्रियोद्धार किया। इन्दौर में पैंतालीस आगम वांचे। आपने बत्तीस वर्ष पर्यन्त विद्याध्ययन किया था। यति अवस्था में आपने ज्योतिष विषयकग्रन्थों का भी गहन अध्ययन किया था पर साधु होने के बाद उस ओर लक्ष नहीं दिया। कायथा में एक दीक्षा दी। यति अवस्था के शिष्य तिलोकमुनि भी कुछ दिन साधुपने में रहे थे। सं० १९५२ में उदयपुर चौमासा कर केशरियाजी पधारे। खैरवाड़ा में जैनमन्दिर की प्रतिष्ठा करवायी। सं० १९५३ देसूरी, १९५४ जोधपुर, सं० १९५५ जेसलमेर, १९५६ फलौदी चौमासा करके १९५७ में बीकानेर पधारे और अपनी यतिपने की सारी सम्पत्ति को जिसे पहले ही परित्याग कर चुके थे विधिवत् ट्रष्टी आदि कायमकर संघ को सुपुर्द की। सं० १९५८ जैतारण चौमासा कर गोड़वाड़ पंचतीर्थी करते हुए फलोदी निवासी सेठ फूलचन्दजी गोलछा के संघ सहित शत्रुञ्जय-यात्रा की। सं० १९५९ पालीताना, १९६० पोरबन्दर चातुर्मास कर कच्छ देश में पदार्पण किया। मुंद्रा, मांडवी, बिदड़ा, भाडिया, अंजार आदि स्थानों में पाँच वर्ष विचरे और पाँच उपधान करवाये। दस साधु-साध्वियों को दीक्षा दी। माण्डवी से आपके उपदेश से सेठ नाथाभाई ने शत्रुंजय का संघ निकाला। सं० १९६६ में आपश्री ने १७ ठाणों से चातुर्मास पालीताना में किया। नन्दीश्वर द्वीप की रचना हुई और पाँच साधु-साध्वियों को दीक्षित किया। सं० १९६७ में जामनगर चातुर्मास कर उपधानतप कराया, चार दीक्षाएं हुईं। सं० १९६८ में मोरबी चातुर्मास कर भोयणी, संखेश्वर होते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हुए अहमदाबाद पधारे। १९६९ का चातुर्मास किया। फिर तारंगाजी, खंभात यात्रा कर सं० १९७० का चौमासा पालीताना किया। रतलाम वाले सेठ चाँदमलजी की धर्मपत्नी फूलकुँवर बाई ने आपसे भगवतीसूत्र वंचाया, उपधान करवाया। सोने की मोहरों की प्रभावना और स्वधर्मीवात्सल्यादि किये।

पालीताना से आपश्री भावनगर, तलाजा होते हुए खंभात पधारे। वहाँ से सेठ पानाचन्द भगूभाई की विनती से सूरत पधार कर सं० १९७१ का चौमासा किया। वहाँ साधुओं को दीक्षा दी। तदनन्तर जगड़िया, भरौंच, कावी तीर्थ होते हुए पादरा पाधारे। वहाँ से बड़ौदा होते हुए बम्बई पधारे। मोतीसाह सेठ के वंशज सेठ रतनचन्द खीमचन्द, मूलचन्द हीराचन्द, प्रेमचन्द कल्याणचन्द, केशरीचन्द कल्याणचन्द आदि संघ ने आपका प्रवेशोत्सव बड़े ठाठ से कराया। लालबाग में सं० १९८२ का चौमासा करके भगवतीसूत्र वाँचा। आपकी विद्वत्ता, वाचनकला और उच्चचरित्र से संघ बड़ा प्रभावित हुआ और आपकी इच्छा न होते हुए भी संघ के अत्यन्त आग्रह से आचार्यपद स्वीकार करना पड़ा। इस अवसर पर लालबाग में पंचतीर्थी की रचना हुई। बीकानेर से श्रीजिनचारित्रसूरिजी को साम्नाय सूरिमंत्र देने के लिए बुलाया गया।

सं० १९७३ का चौमासा भी बम्बई हुआ। विहार करके मार्ग में तीन साधुओं को दीक्षित किया। सूरतवाली कमलाबाई की विनती से बुहारी पधार कर चातुर्मास किया और श्रीवासुपूज्य भगवान के जिनालय की प्रतिष्ठा करवायी। तीन दीक्षाएं दीं। सुरत चातुर्मास के लिए पानाचन्द भगुभाई और कल्याणचन्द घेलाभाई आदि की विशेष विनति से शीतलवाड़ी उपाश्रय में विराजे। पानाचन्द भाई ने जिनदत्तसूरि ज्ञानभंडार बनवाया व उद्यापन किया। इस अवसर पर श्रीजयसागरजी को उपाध्यायपद व सुखसागरजी को प्रवर्त्तक पद से विभूषित किया। प्रेमचंद केशरीचन्द ने उद्यापन किया। धम्माभाई, पानाभाई, मोतीभाई आदि ने चतुर्थ व्रत ग्रहण किया। सं० १९७५-७६ का चातुर्मास करके सं० १९७७ में बड़ौदा चातुर्मास किया। रतलाम वाले सेठजी ने आकर मालवा पधारने की वीनती की और रुपया-नालेर की प्रभावना की। तदनन्तर आप अहमदाबाद, कपड़बंज, रम्भापुर, झाबुआ होते हुए रतलाम पधारे। उपधानतप के अवसर पर रतलाम-नरेश सज्जनसिंहजी भी दर्शनार्थ पधारे। यहाँ पाँच साधु-साध्वियों को दीक्षित कर इन्दौर पधारे। सं० १९७९ का चातुर्मास कर भगवती मूत्र वांचा। रतलाम वाले सेठाणीजी ने रुपया नारेल की प्रभावना की। श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरिजी ज्ञान भण्डार की स्थापना हुई। उ० सुमतिसागरजी को महोपाध्याय पद, राजसागरजी को वाचक पद व मणिसागरजी को पण्डित पद से विभूषित किया गया। संघ सहित मांडवगढ़ की यात्रा कर भोपावर, राजगढ़, खाचरोद, सेमलिया होते हुए सैलाना पधारे। सैलाना नरेश आपके उपदेशों से बड़े प्रभावित हुए। तदनन्तर प्रतापगढ़ होते हुए मंदसौर में सं० १९७९ का चातुर्मास किया। वहाँ से नीमच, नींबाहेड़ा, चित्तौड़ होते हुए करहेड़ा पार्श्वनाथ और देवलवाड़ा होकर उदयपुर पधारे। कलकत्ता वाले बाबू चंपालाल प्यारेलाल के संघ सहित केशरिया जी पधारे। वहाँ से लौटकर सं० १९८१ का चातुर्मास ठाणा २५ से उदयपुर किया। तदनन्तर राणकपुर पंचतीर्थी करके जालोर, बालोत्तरा पधारे। सं० १९८२ का चातुर्मास बालोतरा किया। नाकोड़ा पार्श्वनाथ यात्राकरके संघसहित जेसलमेर पधारे। साधु-विहार न होने से मारवाड़ में लोग धर्म विमुख हो गये थे। आपने जिनप्रतिमा के आस्थावान करके बाहड़मेर में एक दिन में ४०० मुहपत्तियां तोड़वाकर श्रद्धालु बनाया। सं० १९८३ में जेसलमेर चातुर्मासकर वहां के श्रीजिनभद्रसूरि ज्ञानभंडार के ताड़पत्रीय ग्रन्थों का जीर्णोद्धार कराया। कई प्रतियों के फोटो स्टेट व नकले करवाई।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कई ग्रन्थों की प्रेसकापियाँ करवा लाये। सं० १६८४ का चोमासा फलोदी करके मा० सु० ५ को बीकानेर पधारे। बीकानेर में आपने तीन चातुर्मास किये जिसमें उपधान, दीक्षा उद्यापनादि हुए। श्री प्रेमचन्दजी खचानची ने उपधान करवाया। उस समय रुग्णावस्था में भी उन्होंने शिष्यों को समस्त आगमों की वाचना दी थी। हमारी कोटड़ी में चातुर्मास होने से हमें धार्मिक अभ्यास, धर्मचर्चा, व्याख्यान-श्रवण, प्रतिक्रमणादि का अच्छा लाभ मिला।

सं० १६८७ के चातुर्मास के अनन्तर आप सूरतवाले श्री फतेचन्द प्रेमचन्द भाई की वीनति से पालीताना पधार कर सं० १६६४ मिती माघ सुदि ११ के दिन स्वर्गवासी हुए।

आपकी प्रतिमाएं शत्रुंजय तलहटी मंदिर-धनावसही दादावाड़ी में, जैनभवन में, और बीकानेर श्रीजिन-कृपाचन्द्रसूरि उपाश्रय में है रायपुर के मंदिर में भी आपकी प्रतिमा पूज्यमान है।

आपके उपदेश से इन्दौर, सूरत, बीकानेर आदि ज्ञान-भंडार, पाठशालाएँ, कन्याशालाएं, खुली। कल्याणभुवन, चांदभुवन आदि धर्मशालाएँ तथा जिनदत्तसूरि ब्रह्मचर्याश्रम संस्थाओं के स्थापन में आपका उपदेश मुख्य था। आपने बहुत से स्तवन, सज्झाय, गिरनार पूजा आदि कृतियों की रचना की जो कृपाविनोद में प्रकाशित हैं। कल्पसूत्र टीका द्वादश पर्वव्याख्यान व श्रीपाल चरित्र के हिन्दी अनुवाद करके आपने हिन्दी भाषा की बड़ी सेवा की।

सूरत से श्रीजिनदत्तसूरि प्राचीन पुस्तकोद्धार फण्ड ग्रन्थमाला चालू कर बहुत से महत्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन करवाया। स्वर्गवास के समय आपकी साधु साध्वी समुदाय लगभग ७० के आस पास था। तदनन्तर नए साधु दीक्षित न होने से घटते २ अभी साधुओं में केवल वयोवृद्ध मुनि मंगलसागर जी और २०-२२ साध्वियाँ ही रहे हैं।

सूरिजी के तीन चौमासा में हमें उन्हें निकट से देखने का अवसर मिला। जो गुण उनमें देखे गये अद्यतन कालीन साधुओं में दुर्लभ हैं। उनमें समय की पाबन्दी बड़ी ज़बर्दस्त थी। विहार, प्रतिक्रमणादि किसी भी क्रिया में कोई आवे या न आवे, एक मिनिट भी विलम्ब नहीं करते। शास्त्रों का अध्ययन-अभ्यास एवं स्मरणशक्ति भी बहुत गजब की थी। भगवती सूत्र जैसे अर्थ गंभीर आगम को बिना मूल पढ़े सीधा अर्थ करते जाते थे। यह उनके गहरे आगम ज्ञान का परिचायक था।

आप एक आसन पर बैठे हुए घण्टों जाप करते, व्याख्यान देते। आपके पास गुरु-परम्परागत आम्नाय और गच्छमर्यादा आदि का पूर्ण अनुभव था। आपने अपने जीवन में जैन संघ का जो उपकार किया, वर्णनातीत है। आप प्रतिदिन एकाशना व तिथियों के दिन प्रायः उपवास किया करते थे। आप अप्रमत्त संयमपालन में प्रयत्नशील रहते थे।

आचार्य श्रीजयसागरसूरिजी

श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरिजी का शिष्य-समुदाय बड़ा विशाल था। आपके विद्वान शिष्य आणंदमुनिजी का स्वर्ग-वास आपके समक्ष ही बहुत पहले हो गया था। द्वितीय शिष्य उपाध्याय जयसागरजी थे जिन्हें आचार्य पद देकर आपने जयसागरसूरिजी बनाया, बड़े विद्वान और क्रियापात्र थे। श्रीजयसागरसूरिजी के छोटे भाई राजसागरजी ने भी सूरिजी के पास दीक्षा ली थी उन्होंने सूरिजी की बहुत सेवा की और छोटी बहिन ने भी दीक्षा ली थी जिनका नाम हेतश्रीजी था, जिनकी शिष्याएं कीर्त्तिश्रीजी, महेन्द्रश्रीजी आदि हैं, कीर्त्तिश्रीजी अभी मन्दसोर में विराजमान हैं।

श्रीजयसागरसूरिजी महाराज प्रकाण्ड विद्वान थे। बिना शास्त्र हाथ में लिए भी शृंखलाबद्ध व्याख्यान देने का अच्छा अभ्यास था। आपने श्रीजिनदत्तसूरि चरित्र दो भागों में तथा गणधर-सार्धशतक भाषान्तर आदि कई पुस्तकें लिखी थीं। आप ठाम चौविहार करते थे, अपने व्रत-नियमों में बड़े दृढ़ थे। बीकानेर की भयंकर गर्मी में

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भी आपने पानी लेना स्वीकार नहीं किया और समाधि पूर्वक अपनी देह का त्याग कर दिया। बीकानेर रेलदादाजी में आपके अग्निसंस्कार स्थान में स्मारक विद्यमान है। गढसिवाणा, मोकलसर आदि में आपने चातुर्मास किए थे गढसिवाणा में आपके ग्रन्थों का दादावाड़ी में संग्रह विद्यमान है। श्रीजिनजयसागरसूरिजी कृत श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरि चरित्र ५ सर्ग और १५७० पद्यों में सं० १९९४ फा० सु० १३ पालीताना में रचित है जो जिनपालोपाध्यायकृत द्वादशकुलकवृत्ति के साथ श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरि ज्ञानभंडार पालीताना से प्रकाशित है। इसमें इन्होंने अपना जन्म १९४३ दीक्षा १९५६ उपाध्याय पद १९७६ व आचार्य पद १९९० पालीताना में होना लिखा है।

उपाध्याय सुखसागरजी

श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरिजी के शिष्यों में उपाध्यायजी का स्थान बड़ा महत्त्वपूर्ण है। आप प्रसिद्ध वक्ता थे। आपकी बुलन्द वाणी बहुत दूर-दूर तक सुनाई देती थी। आप अधिकतर गुरुमहाराज के साथ विचरे और धार्मिक क्रियाएं कराने आदि से संघ को सम्भालने का काम आपके जिम्मे था। आप ने संस्कृत, काव्य, अलंकार आदि का भी अच्छा अभ्यास किया था। बीकानेर चातुर्मास के समय आपको हजारों श्लोक कण्ठस्थ थे। ग्रन्थ सम्पादनादि कामों में आप हरदम लगे रहते और श्रीजिनदत्तसूरि प्राचीन पुस्तकोद्धार फंड सूरत से सर्व प्रथम गणधर सार्द्धशतक प्रकरण व बाद में पचासों ग्रन्थों का प्रकाशन हो पाये वह आप के ही परिश्रम और उपदेशों का परिणाम था। गुरुमहाराज के स्वर्गवास के पश्चात् भी आपने वह काम जारी रखा और फलस्वरूप बहुत ग्रन्थ प्रकाश में आये।

आप इन्दौर के निवासी मराठा जाति के थे। सेठ कानमलजी के परिचय में आने पर उल्लासपूर्वक उनके सहाय्य से गुरुमहाराज के पास कच्छ में जाकर दीक्षित हुए। आपका नाम सुखसागर रखा गया। शास्त्राभ्यास करके विद्वान हुए और व्याख्यान-वाणी में निष्णात हो गए। सं० १९७४ मा० सु० १० को गुरुमहाराज ने सूरत में मंगलसागरजी को दीक्षित करके आपके शिष्य रूप में प्रसिद्ध किया। उस समय कृपाचन्द्रसूरिजी १८ ठाणों से थे, इनका १९वां नंबर था। सूरिजी के प्रत्येक कार्यों में आपका पूरा हाथ था। इन्दौर में श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरि ज्ञानभण्डार की स्थापना की। आपको सूरिजी ने प्रवर्त्तक पद से विभूषित किया। बालोतरा चौमासा में बहुत से स्थानकवासियों को उपदेश देकर जिनप्रतिमा के प्रति श्रद्धालु बनाया। मध्याह्न में आप जसोल गांव में व्याख्यान देने जाते व शास्त्रचर्चा व धर्मोपदेश देकर जिनप्रतिमा-पूजा की पुष्टि करते थे। आप उपधान आदि की प्रेरणा करके स्थान-स्थान पर करवाते, संस्थाएं स्थापित करवाते एवं सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध क्रान्तिकारी उपदेश देकर समाज में फैले हुए मिथ्यात्व को दूर कर व्रत-पच्चक्खाण दिलाते थे। आपके कई चातुर्मास गुरुमहाराज के साथ व कई अलग भी हुए।

जैसलमेर चौमासे में ज्ञानभण्डार के जीर्णोद्धार, व प्राचीन प्रतियों की नकलें फोटोस्टेट करवाने में आपका पूरा योगदान था। फलौदी, बीकानेर में भी उपधान आदि हुए। फिर गुरुमहाराज के साथ पालीताना पधारे। सं० १९९२ में शत्रुञ्जय तलहटी की धनवसही में आपकी प्रेरणा से भव्य दादावाड़ी हुई जिसमें श्रीपूज्य श्रीजिनचारित्रसूरिजी के पास प्रतिष्ठा सम्पन्न करवायी उस समय आप उपाध्याय पद से विभूषित हुए एवं मुनि कान्तिसागरजी की दीक्षा हुई। इसके बाद सूरत, अमलनेर, बम्बई आदि में चातुर्मास किया। ग्रन्थ सम्पादन-प्रकाशन तो सतत् चालू ही था। नागपुर, सिवनी, बालाघाट, गोंदिया आदि स्थानों में चातुर्मास किये। उपधान तप आदि हुए। गोंदिया का पन्द्रह वर्षों से चला आता मनमुटाव दूर कर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

के सं० १९९९ के माघ महीने में समारोह पूर्वक मन्दिर की प्रतिष्ठा करवायी। तदनन्तर राजनांदगांव के चातुर्मास में भी उपधान आदि करवाये। रायपुर होकर महासमुन्द में चातुर्मास किया। धमतरी पधारकर सं० २००१ के फाल्गुन में अञ्जनशलाका प्रतिष्ठा, गुरुमूर्त्ति प्रतिष्ठादि विशाल रूप में उत्सव करवाये। कान्तिसागरजी की प्रेरणा से महाकोशल जैन सम्मेलन बुलाया गया जिसमें अनेक विद्वान पधारे थे। फिर रायपुर चातुर्मास कर सम्मेतशिखर महातीर्थ की यात्रार्थ पधारे। कलकत्ता संघ की वीनती से दो चातुर्मास किये, बड़ा ठाठ रहा। फिर पटना और वाराणसी में चातुर्मास किये, फिर मिर्जापुर, रीयां होते हुए जबलपुर पधारे। वहां ध्वजदण्डारोपण, अनेक तपश्चर्यादि के उत्सव हुए। वहां से सिवनी होते हुए राजनांद गांव में सं० २००८ का चातुर्मास किया। आपके उपदेश से नवीन दादावाड़ी का निर्माण होकर प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। वहां से सिवनी हो भोपाल व लश्कर, ग्वालियर चातुर्मास किये। जयपुर पधारकर चातुर्मास किया। अजमेर दादासाहब के अष्टम शताब्दी उत्सव में भाग लेकर उदयपुर चातुर्मास किया। तदनन्तर गढसिवाणा चातुर्मास कर गोगोलाव जिनालय की प्रतिष्ठा कराई। गुजरात छोड़े बहुत वर्ष हो गये थे, अहमदाबाद संघ के आग्रह से वहां चातुर्मास कर पालीताना पधारे सं० २०१६ में उपधान तप हुआ। गिरिराज पर विमलवसही में दादासाहब को प्रतिष्ठा के समय जिनदत्तसूरि सेवासंघ के अधिवेशन व साधु सम्मेलन आदि में सब से मिलना हुआ।

पालीताना-जैन भवन में चातुर्मास किये। आपकी प्रेरणा से जैनभवन की भूमि पर गुरुमन्दिर का निर्माण हुआ। दादा साहब व गुरुमूर्तियों की प्रतिष्ठा हुई। सं० २०२२ में घण्टाकर्ण महावीर की प्रतिष्ठा हुई। पालनपुर के गुरु भक्त केशरिया कम्पनी वालों के तरफ से ५१ किलो का महाघण्ट प्रतिष्ठित किया। दादासाहब के चित्र, पंचप्रतिक्रमण एवं अन्य प्रकाशन कार्य होते रहे। वृद्धावस्था के कारण गिरिराज की छाया में ही विराजमान रह कर सं० २०२४ के वैशाख सुदि ६ को आपका स्वर्गवास हो गया।

पुरातत्व एवं कलामर्मज्ञ प्रतिभामूर्ति मुनि श्रीकान्तिसागरजी को श्रद्धाँजलि

[लेखक—अगरचन्द नाहटा]

संसार में दो तरह के विशिष्ट व्यक्ति मिलते हैं। जिनमें से किसी में तो श्रम की प्रधानता होती है किसी में प्रतिभा की। वैसे प्रतिभा के विकास के लिए श्रम की भी आवश्यकता होती है और अध्ययन व साधना में परिश्रम करने से प्रतिभा चमक उठती है। फिर भी जन्म जात प्रतिभा कुछ विलक्षण ही होती है, जो बहुत परिश्रम करने पर भी प्रायः प्राप्त नहीं होती। अभी-अभी जयपुर में जिन साहित्यालंकार पुरातत्ववेत्ता और कलामर्मज्ञ मुनिश्री कान्तिसागर जी का असामयिक स्वर्गवास ता: २८ सितम्बर को शाम को हो गया है, वे ऐसे ही प्रतिभा सम्पन्न विद्वान मुनि थे। जिनका संक्षिप्त परिचय यहां दिया जा रहा है।

बीसवीं शताब्दी के जैनाचार्यों में खरतरगच्छ के आचार्य श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरिजी बड़े गीतार्थ विद्वान और क्रियापात्र आचार्य हो गये हैं। जो पहले बीकानेर के यति सम्प्रदाय में दीक्षित हुए थे। आगे चलकर अपने सारे परिग्रह को बीकानेर के खरतरगच्छ संघ को सुपुर्द करके

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org